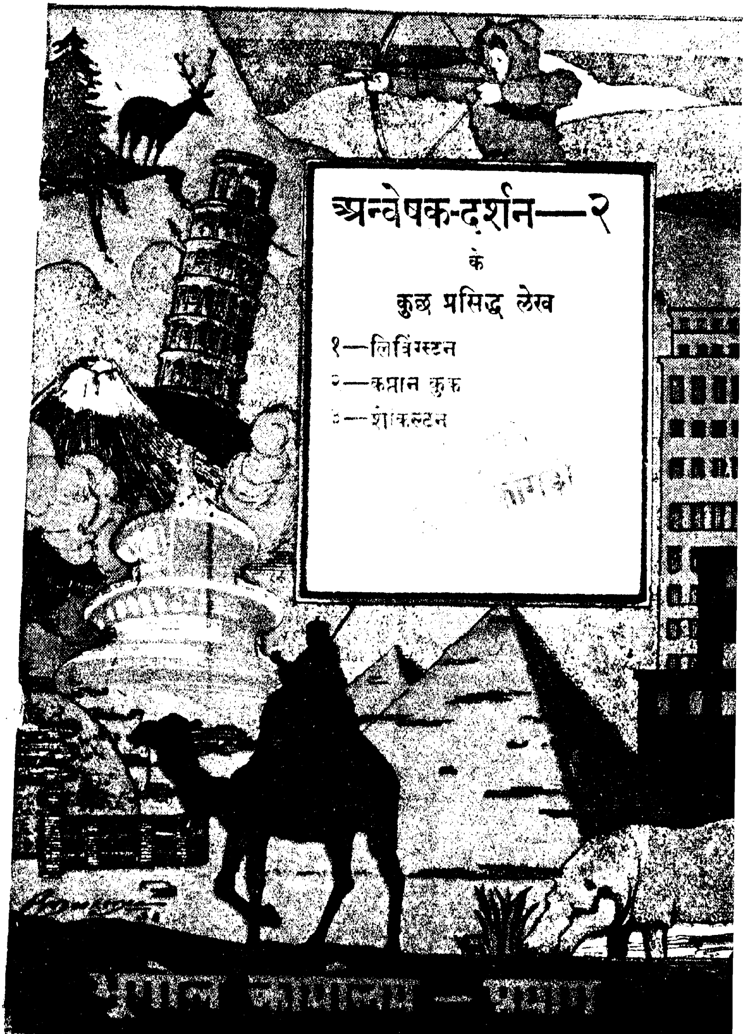
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४५



अन्वेषक-दर्शन—२

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—लिविंगस्टन

२—कप्तान कुक

३—शैकल्टन

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

मई, १९४३] **देश-दर्शन** [ज्येष्ठ १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४] अन्वेषक-दर्शन—२ { संख्या ११ / पूर्ण संख्या ४५

सम्पादक

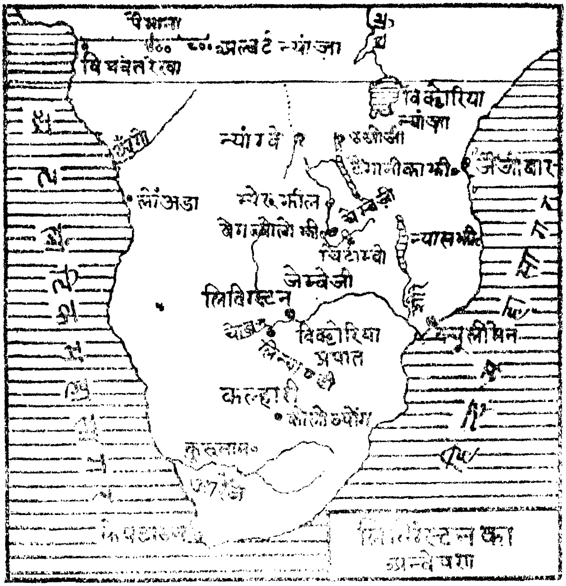
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-
Foreign	Rs. 6/-
This copy	As. -/6/-

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)



विषय-सूची

द्वितीय-खण्ड

अन्वेषक-दर्शन

द्वितीय खण्ड

लिविंग्स्टन

अफ्रीका की खोज करने वालों में डेविड लिविंग्स्टन का सबसे अधिक ऊंचा स्थान है। डेविड लिविंग्स्टन १८१३ ईस्वी में १६ मार्च को ग्लास्गो के पास ब्लैंटायर नामी गांव में पैदा हुआ था। उसके माता पिता इतने निर्धन थे कि वे उसे उच्च शिक्षा देने में असमर्थ थे। उसकी माता एक दर्जी की लड़की थी। पिता चाय बेचता था। अतः उसे बहुत ही साधारण प्रारम्भिक शिक्षा मिली थी। १० वर्ष की अवस्था में उसने अपने गांव का स्कूल छोड़ा और पास वाले एक पुतलीघर में नौकरी कर ली। कारखाने की मज़दूरी से पैसे बचा कर वह विविध विषयों की पुस्तकें मोल लेकर पढ़ता था। वह काम करने के बाद रात्रि पाठशाला में भी पढ़ने जाता था। २० वर्ष की अवस्था में उसमें बड़ा परिवर्तन हुआ। २१ वर्ष की अवस्था में उसने मिशनरी बनने का निश्चय किया। अपने आपको अधिक उपयोगी बनाने के लिये उसने ग्लास्गो के एक कालेज में डाक्टरी और मिशनरी

(धार्मिक) शिक्षा ग्रहण की। पहले वह चीन को जाना चाहता था। लेकिन व्याख्यान देने में अधिक कुशल न होने से वह अफ्रीका भेजा गया। ८ दिसम्बर १८४० ईस्वी में उसने शुभाशान्तरीप❀ (केप आफ गुड होप) के लिये प्रस्थान किया। जहाज़ को मार्ग में ३ महीने लगे। इस बीच में कप्तान ने लिविंग्स्टन को सूर्य, चन्द्रमा और तारों की सहायता से अक्षांश और देशान्तर निकालने की विधि बतलाई। इससे आगे चलकर लिविंग्स्टन को अन्वेषण में बड़ी सहायता मिली।

आरम्भ में लिविंग्स्टन ने मिशन के काम से अफ्रीका में यात्रा की। वह अपने ससुर मोफट के साथ काम करने लगा। मोफट लिविंग्स्टन से ३० वर्ष पहले अफ्रीका आया था। १८१० ईस्वी में मोफट कुरुमन में ठहर गया था जो वाल नदी और कल्हारी रेगिस्तान के

❀ इस अन्तरीप का पता १४८६ में एक पुर्तगाली बर्थोलोम्यू डायाज़ ने लगाया था। तूफानों के कारण उसने इसका नाम तूफानी अन्तरीप रक्खा शायद यहां से भारत का पता लग जाय इस आशा से पुर्तगाल के प्रिन्स हेनरी ने इसका नाम शुभाशान्तरीप रक्खा।

बीच में केपटाउन से ७०० मील उत्तर की ओर स्थित है।

केपकलोनी के पूर्वी भाग में काफिर और ज़ूलू लोग रहते हैं। इसके पश्चिमी भाग में बेचुआना लोग रहते हैं। १६५१ ईस्वी से यहां डच किसान रहने लगे जो बोअर कहलाते हैं। १८०६ ई० में अंग्रेज़ों ने इस भाग को हालैंड से छीन लिया। लिविंग्स्टन का अधिकतर कार्य बेचुआना लोगों के बीच में था। इसलिये उसने उनकी भाषा सीखी और उनके रहन-सहन से परिचय प्राप्त किया।

डाक्टरी जानने के कारण लिविंग्स्टन को बड़ी सफलता मिली। वह बड़ा चतुर शिकारी था। इन कई बातों से बेचुआना लोग उसे बहुत चाहते थे। एक बार वह कुरूमान से २०० मील की दूरी पर सिंह का शिकार करते समय बुरी तरह से घायल हुआ। कुछ समय से बेचुआना लोगों के बाड़ों में घुसकर सिंह उनकी गायों को मार कर खा जाते थे। इसलिये बेचुआना लोग सिंहों को नष्ट करने के लिये निकले। लिविंग्स्टन ने भी उनके साथ हो लिया। एक स्थान पर ३० गज की

दूरी पर लिविंग्स्टन ने एक सिंह को चट्टान पर बैठा देखा। उसने तुरन्त गोली छोड़ी। सिंह बुरी तरह से घायल हुआ। फिर भी उसने गुर्राकर लिविंग्स्टन को आ दबाया और कन्धा पकड़कर नोचना आरम्भ किया। जैसे बिल्ली चूहे पर झपट्टा मारती है वही हालत सिंह ने लिविंग्स्टन की कर दी। इतने में एक मूल निवासी ने सिंह पर गोली चलाई। सिंह लिविंग्स्टन को छोड़ कर इस मनुष्य पर आ झपटा। इस पर एक तीसरे मनुष्य का भी कन्धा पकड़ लिया। लेकिन गोलियां अपना काम कर चुकी थीं। मरते मरते सिंह ने ३ मनुष्यों को घायल अवश्य कर डाला। लेकिन वह स्वयं भी मर गया। सिंह ने लिविंग्स्टन के बायें हाथ की हड्डी ऐसी तोड़ डाली थी कि इसको बदलवाना पड़ा फिर भी इस हाथ में अक्सर दर्द होता रहा।

लिविंग्स्टन ने माबोटसा में अपने रहने के लिये घर बनाया। १६४४ में उसने मोफट की लड़की से ब्याह किया। यहां वह १८४६ ईस्वी तक रहा। १८४७ में वह कोलोबेंग को चला आया। उसका परिवार बढ़ गया था। उसके तीन लड़के और १ लड़की थी। कोलो-

वेंग में उसे भोजन का बड़ा कष्ट था। एक बार आटा न मिलने से चोकर की रोटी खानी पड़ी। कभी कभी टिड्डियों को कभी एक बड़े कीड़े और कभी बड़े मेंढक को भूनकर खाना पड़ता था।

कल्हारी से लौटकर कुछ मूलनिवासियों ने लिविंग्स्टन को नगामी झील का पता दिया। उन्होंने यह भी बतलाया कि रेगिस्तान के आगे सुन्दर हरी भरी भूमि है। जहां असंख्य नदियां हैं और मनुष्य रहते हैं। दो अंग्रेज़ साथियों को लेकर लिविंग्स्टन १८४९ में नगामी झील का अन्वेषण करने के लिये निकला। रास्ता बतलाने के लिये उनके साथ मूलनिवासी थे। रेगिस्तान को पार करने और झील तक पहुंचने में २ महीने लगे। उस समय झील में पर्याप्त पानी था। लेकिन लगातार कई वर्ष तक वर्षा न होने से झील सूख गई।

कल्हारी सहारा की तरह एक दम उजाड़ रेगिस्तान नहीं है। कल्हारी में सफेद बारीक बालू अवश्य है। लेकिन इसमें स्थान स्थान पर घास और झाड़ियां हैं। यहां हिरण, हाथी, गैंडा, चीता, सिंह और गीदड़

रहते हैं। कुछ स्थानों में कुएँ हैं। जहां पहले नदी थी उसके सूखे मार्ग में भी कहीं कहीं पानी निकल आता है। यहाँ तरबूज़ बहुत उगते हैं। इन्हीं से पशु और मनुष्य अपनी प्यास बुझाते हैं। बेचुआना लोगों के अतिरिक्त रेगिस्तान में बुशमैन (झाड़ी में रहने वाले) लोग रहते हैं। ये लोग कोई चीज़ नहीं उगाते हैं और शिकार से निर्वाह करते हैं।

प्रथम यात्रा में लिविंग्स्टन यहां के सरदार से नहीं मिल सका। दूसरे वर्ष लिविंग्स्टन ने नगामो झील की फिर यात्रा की। उसकी स्त्री और बच्चे भी साथ थे वे बैलगाड़ी पर चलते थे। लिविंग्स्टन घोड़े पर सवार था। बच्चों को ज्वर आ गया लिविंग्स्टन को घर लौटना पड़ा। तीसरी बार वह फिर इधर आया। इस बार नगामो झील की ओर जाने के बदले वह सीधा उत्तर की ओर बढ़ा जहां सेबीटुआने सरदार रहता था इसका राज्य मध्य अमरीका में था। कई कठिनाइयों के बाद सब लोग चौबे नदी के पास पहुंचे। सरदार स्वयं १०० मील चल कर लिविंग्स्टन से मिलने आया। कुछ समय बाद सरदार मर गया। लिविंग्स्टन चौबे

नदी के किनारे किनारे चलकर कुछ समय (१८५१) में ज़ेम्बेज़ी नदी के किनारे पहुँचा। कई सौ वर्ष पहले हिन्दमहासागर तट पर एक पुर्तगाली ने ज़ेम्बेज़ी के मुहाने का पता लगाया था। वह मुहाने से कुछ दूर ऊपर की ओर भी आया था। लेकिन जिस भाग में लिविंग्स्टन ने ज़ेम्बेज़ी का पता लगाया वहां अब तक कोई गोरा मनुष्य नहीं आया था। यह गरमी की ऋतु थी। फिर भी ज़ेम्बेज़ी नदी मुहाने से १२०० मील की दूरी पर कई सौ गज़ चौड़ी थी।

चौबे और ज़ेम्बेज़ी नदी के बीच में बहुत सी भूमि दलदली और अस्वास्थ्यकर थी। अतः अपने परिवार इंगलैंड भेजने के लिये लिविंग्स्टन केपटाउन और एक जहाज पर स्त्री-बच्चों को चढ़ाकर वह फिर अपने अन्वे-षण-कार्य के लिए लौटा। १५०० मील चलने के बाद वह फिर १८५३ ईस्वी में चौबे नदी के किनारे लौटा। यहाँ लिन्याणो नगर में नये सरदार ने उसका अच्छा स्वागत किया। जब लिविंग्स्टन ज़ेम्बीज़ी नदी की ओर बढ़ा तब सरदार उसके साथ हो लिया। ३३ नावें इकट्ठी की गईं। पूरी मंडली जेम्बेज़ी नदी के ऊपरी भाग में

उस स्थान पर पहुँची जहां अब तक कोई गोरा मनुष्य नहीं गया था।

जेम्बेज़ी नदी बड़ी सुन्दर थी। कहीं कहीं एक मील चौड़ी थी। लेकिन इसका पड़ोस स्वास्थ्यकर न था। अतः लिविंग्स्टन ने पश्चिम की ओर अटलांटिक तट पर पहुँचने का निश्चय किया। उसने १८५३ के नवम्बर मास में लिन्यांटी से प्रस्थान किया। उसके साथ ३५ मूलनिवासी थे। ये लोग भी अटलांटिक तट तक पहुंचने के इच्छुक थे। यात्रा तीन मास तक लगातार करनी पड़ी। कहीं जंगल, कहीं बाढ़ और कहीं खुले मैदान में होकर जाना पड़ता था। कहीं ऊंची ऊंची घास थी। रास्ते में कई नदियों को पार करना पड़ा। कहीं कहीं पुर्चगाली लोग मिले। यह लोग हाथी दांत और गुलाम मोल लेने आये थे।

१८५४ के फर्वरी मास में लिविंग्स्टन अटलांटिक तट के पुर्चगाली नगर लोअंडा में पहुँचा। उसे ज्वर आ रहा था। वह इतना कमज़ोर हो गया कि कठिनाई से उस बैल पर चढ़ सकता था जिस पर चढ़कर उसने अपनी यात्रा का अन्तिम मार्ग तय किया था। मूलनिवा-

सियों को समुद्र देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। जब लिविंग्स्टन ने उन्हें एक अंग्रेज़ी जहाज़ पर चढ़ाकर घुमाया तो वे और भी अधिक प्रसन्न हुये। वे कहते थे यह कैसा नगर है जिसके ऊपर रस्सी पकड़ कर चढ़ना पड़ता है।

कुछ समय के पश्चात लिविंग्स्टन ने लोअंडा से भीतर की ओर प्रस्थान किया। इस बार वह धीरे धीरे जाने लगा। १८५५ के सितम्बर मास में वह लिन्यांटी पहुंचा। यहां ढाई महीने ठहरने के बाद उसने ज़ेम्बेज़ी के किनारे किनारे पूर्व की ओर मुहाने तक जाने का निश्चय किया। एक सप्ताह नाव पर चलने के बाद उसने देखा कि यह नदी एक बड़ा प्रपात बनाती है। यह संसार भर में सबसे बड़ा प्रपात है'। अफ्रीका निवासी इसे मोसी-ओ-आ तून्या कहते हैं। इसका अर्थ है 'वहां धुआं कोलाहल करता है। सचमुच यहां अधिक उंचाई से गिरने के कारण कोलाहल मचाने के साथ जल अपने बारीक सफेद कणों को बादल के समान दूर तक उछालता रहता है जो धुआं के समान दिखाई देते हैं। लिविंग्स्टन एक छोटी नाव पर चढ़ा हुआ एक छोटे द्वीप

के किनारे पहुँचा जहां प्रपात का सिरा था। वहां से लिविंग्स्टन यह न जान सका कि पानी कहां जाता है। इसलिये वह धीरे धीरे सावधानी से द्वीप के सिरे तक गया। यहां उसने देखा कि जेम्बेज़ी नदी का जल चट्टान के ऊपर उछलता हुआ नीचे वेग से खौलते हुये कुंडी में गिरता है। इसके दूसरी ओर ऊंची पहाड़ी दीवार थी। पानी ने ज़ोर से चट्टान को काटकर एक तंग और देशी नद-कन्द्रा बना ली थी। इसीमें सफेद जल वेग से दूसरी ओर को बहता था। महारानी विक्टोरिया के सम्मानार्थ लिविंग्स्टन ने इसे विचित्र प्रपात का नाम विक्टोरिया प्रपात रक्खा आजकल प्रपात से नीचे की ओर ज़ेम्बेज़ी के ऊपर रेल का पुल बन गया है। प्रपात से कुछ मील ऊपर की ओर लिविंग्स्टन-नगर बस गया है।

नीचे की ओर बढ़ने पर लिविंग्स्टन ने देखा कि इस जेम्बेज़ी में फिर नावें चल सकती हैं। नीचे की ओर बढ़ने पर लिविंग्स्टन ने देखा कि पुर्त्तगालियों ने नदी के किनारे कहीं कहीं छोटे छोटे नगर बसा लिये हैं। एक स्थान पर लिविंग्स्टन का बोझा ढोने वाले मज़दूरों की पंक्ति को चीरते हुये कुछ जंगल में से भाग निकले।

इतने ही में लिविंगस्टन ने देखा कि एक भैंसा एक मज़दूर को सींगों पर उठाये हुये उछाल रहा है। नीचे से खून की धार बह रही थी। मज़दूर मुँह के बल कुछ दूर जा गिरा। लेकिन उसके चोट नहीं आई। वास्तव में भैंसों को आते देख मज़दूर ने अपना बोझा डाल दिया और पास वाले भैंसे के छुरा भोंक दिया। भैंसे ने चिढ़ कर उसे सींगों पर उठा लिया और बीस गज़ की दूरी तक इसी तरह लेजाकर उसे फेंक दिया। लेकिन मज़दूर के कहीं चोट नहीं आई।

१८५६ के मार्च मास में लिविंगस्टन फिर समुद्र-तट पर पुर्त्तगाली बस्ती (केलोमानी) में पहुंचा। इस प्रकार लिविंगस्टन अफ्रीका को पार करके अटलांटिक तट से हिन्दमहासागर-तट तक पहुंच गया। १६ वर्ष के बाद लिविंगस्टन इंगलैंड को लौटा। अपने घर पर वह केवल एक वर्ष रहा। इसके बाद वह फिर अफ्रीका को लौटा उसने पूर्वी और मध्य अफ्रीका से अपनी यात्रा आरम्भ की। ज़ेम्बेज़ी के मुहाने से वह ऊपर की ओर बढ़ा। उसने कई बार ज़ेम्बेज़ी के ऊपरी भाग से निचले भाग की और निचले भाग से ऊपरी भाग की यात्रा की।

लिविंग्स्टन ने शीरे नदी का भी अनुसंधान किया जो मुहाने से १०० मील ऊपर ज़ेम्बेज़ी नदी में मिलती है। १८५८ में लिविंग्स्टन ने पता लगाया कि शीरे नदी न्यासा झील से निकलती है। न्यासा झील ३५० मील लम्बी है और १५ मील से लेकर ५० मील तक चौड़ी है। इस झील का पानी बहुत गहरा है। इसके दोनों किनारों पर ऊँचे पहाड़ खड़े हैं। शीरे नदी उपजाऊ, पहाड़ी और स्वास्थ्यकर प्रदेश में होकर बहती है। इसी से बहुत से अंग्रेज व्यापारी और मिशनरी वहां बस गये। इस समय न्यासालैंड ब्रिटिश साम्राज्य का हरा भरा भाग है। शायर नदी के भाग में कुछ दलदल थे। कुछ हाथी भी थे। इसलिए इस प्रदेश का नाम एलीफेंएट मार्श (हाथी-दलदल) पड़ गया। यहीं अरबी और पुर्चगाली व्यापारी गुलाम मोल लेने आते थे। एक बार सुन्दर कपड़े पहने हुये कुछ शस्त्रधारी ८० स्त्री-पुरुष और बालक गुलामों को हांक रहे थे। लिविंग्स्टन को देखकर वह जंगल में भाग गये। लिविंग्स्टन और उसके साथियों ने चमड़े और लकड़ी के बन्धनों को काटकर गुलामों को छुड़ाया। इन गुलामों ने बतलाया

कि पिछले दिन अपना बन्धन खोलने के अपराध में दो स्त्रियां जान से मार डाली गईं। एक स्त्री अपने बच्चे और मालिक का बोझा ले चलने में असमर्थ थी वह भी मार डाली गई। एक मनुष्य इतना थका था कि चल नहीं सकता था वह भी कुल्हाड़ी से काट डाला गया। गुलामों पर इसी तरह के अत्याचार होते थे। यदि गुलामों के व्यापारी इस घृणित व्यापार को छोड़ कर कपास और गन्ना उगाते तो उन्हें कहीं अधिक लाभ हो सकता था।

१८६१ के सितम्बर और अक्तूबर महीने में लिविंग्स्टन ने एक नाव द्वारा न्यासा झील की यात्रा की। एक बार झील के पश्चिम ओर वाले पहाड़ की चोटी पर लिविंग्स्टन चढ़ा। उसने देखा कि उस ओर की भूमि समतल और स्वास्थ्यकर है। वह ज़ेम्बेज़ी की घाटी में फिर लौट आया। यहाँ १८६२ के आरम्भ में उसकी धर्म पत्नी से भेंट हुई। १८६२ में उसकी स्त्री का देहान्त हो गया। दूसरी यात्रा में उसने न्यासा झील के पश्चिम वाले प्रदेश की खोज की। १८६४ में ब्रिटिश सरकार ने उसे घर बुलाया। इसी समय नील नदी के

निकास का पता लगाकर स्पोक और अल्बर्टयांज़ा का पता लगाकर बेकर इंगलैंड लौटे थे। एक मित्र ने लिविंग्स्टन को १००० पौंड दिया। इतना ही धन इंगलैंड की सरकार और रायलज्याग्राफीकल सोसायटी ने भी दिया। १८६५ में वह बम्बई आया। बम्बई के सौदागरों ने भी उसे काफी धन दिया। नासिक के मिशन स्कूल से १३ मुक्त गुलामों के लड़कों और कुछ सिपाहियों को लेकर लिविंग्स्टन १८६५ में जेंजीवार को गया। जिस जहाज़ पर वह सवार था वह जेंज़ीवार के सुल्तान को भेंट में दिया गया। ६ ऊंट, ३ भैंस ३ खच्चर और ४ गायें लेकर उसने प्रस्थान किया। १८६६ में लिविंग्स्टन फिर अफ्रीका को लौट आया। इस बार उसने ज़ेम्बेज़ी के मुहाने से कुछ उत्तर की ओर एक छोटे बन्दरगाह से यात्रा आरम्भ की। यहां से वह न्यासा झील के दक्षिणी सिरे पर पहुंचा। फिर वह पश्चिम की ओर बढ़ा। यहाँ चेम्बेज़ी नदी मिली जो न जेम्बीज़ी में मिलती थी और न न्यासा झील में गिरती थी। इसका पता लगाने के लिये लिविंग्स्टन ने इस ओर ३ वर्ष तक यात्रा की। १८६९ में उसने पता लगाया

कि चेम्बेजी नदी एक विशाल दलदल में पहुंचती है। इसके पास ही बैंगव्यूलो नाम की बड़ी (१५० मील लम्बी और अस्सी मल चौड़ीं) झील है दलदल के उत्तरी सिरे से एक नदी निकल कर म्वेरू झील में गिरती है। इस झील से निकलने वाली नदी में और भी कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। इस बड़ी नदी को लवालाबा कहते हैं। वास्तव में यही कांगो नदी का ऊपरी भाग है जो संसार की सबसे बड़ी नदियों में से एक है। लवालाबा नदी और न्यासा टैंगनीका झीलों के बीच वाले प्रदेश में अरबी लोग लोगों को पकड़ कर गुलाम बना रहे थे। यहां से यह टैंगानीका झील के किनारे पर बसे हुये उजीजी नगर को गया। उजीजी से वह मनुष्याहारी लोगों के प्रदेश में होकर लवालाबा के किनारे आया।

एक दिन न्यांगो नगर के बाज़ार में अरबी और मूलनिवासियों में झगड़ा हो गया। एक मूल निवासी ने कुछ धोखा दिया। इस पर अरबी लोगों ने भीड़ पर गोलियां चलाईं। सैकड़ों मनुष्य, स्त्री और बच्चे जान से मारे गये। असहाय' मूलनिवासी कुछ न कर सके। जब

लिविंग्स्टन जंगल में होकर उजीजी को लौट रहा था तो मूलनिवासियों ने उसे अरबी समझा। उसकी मंडली पर विषैले तीरों की वर्षा होने लगी। भाग्य से उसके चोट न लगी। १८७१ में लिविंग्स्टन फिर उजीजी पहुँच गया। इंगलैंड से लौटे हुये उसे ६ वर्ष हो गये थे। वह अज्ञात प्रदेश में यात्रा कर रहा था। इससे वह घर पर पत्र भी न भेज सका। इंगलैंड और अमरीका के लोगों को उसके विषय में तरह तरह की शंकायें हो रही थीं। अमरीका के लोगों ने चन्दा करके लिविंग्स्टन का पता लगाने के लिए स्टैनले नामी पत्रकार और यात्री को भेजा। स्टैनले अपने साथ औषधियां और भोजन का सामान भी ले आया। उजीजी नगर में स्टैनले और लिविंग्स्टन की भेंट हुई। स्टैनले से मिलकर लिविंग्स्टन को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसकी भूख बढ़ गई। पांच महीने तक दोनों ने साथ साथ टैंगनीका झील के उत्तरी सिरे का पता लगाया। स्टैनले जैंजीबार को लौट गया। १८७३ के अगस्त मास में लिविंग्स्टन ने टैंगानीका झील के पूर्वी भाग की यात्रा की। यहां से वह बैंगव्यूलो झील की ओर बढ़ा। बैंगव्यूलो के पड़ोस की

भूमि स्पंज के समान थी। कहीं कहीं पेड़ थे। यह बहुत गरम और अस्वास्थ्यकर थी। लिविंग्स्टन इतना बीमार पड़ा कि उसके साथी उसे उठाकर ले चलते थे। अन्त में वह ऐसा बीमार हुआ कि वह चल ही नहीं सकता था। १८७३ की पहली मई को वह मर गया। उसके साथी उसकी लाश और रोज़नामचे को १००० मील दूर समुद्र-तट (ज़ैंज़ीबार) को ले आये। यहां से वह इंगलैंड भेजी गई। इंगलैंड में वेस्ट मिनिस्टर एबी में राजाओं और अन्य महापुरुषों की कब्रें बनी हैं। यहीं लिविंग्स्टन की भी कब्र बनी। इस प्रकार इंगलैंड ने अपने जगत्प्रसिद्ध अन्वेषक का उचित आदर किया।

कप्तान कुक

जेम्स कुक २७ अक्तूबर १७२८ को यार्क शायर के एक छोटे गांव में पैदा हुआ था। उसका बाप एक खेत में मज़दूरी करता था। ८ वर्ष की उम्र में वह गांव के एक स्कूल में पढ़ने के लिये भेज दिया गया। साधारण शिक्षा प्राप्त करने के बाद १६ वर्ष की उम्र में गरीबी के कारण गांव की एक दुकान में नौकरी करनी पड़ी। यहां अधिकतर मछली मारने वाले और चुराकर जहाज़ का सामान उतारने वाले मल्लाह आते थे। इनसे लगातार मिलने जुलने से जेम्स कुक को समुद्री जीवन से बड़ा प्रेम हो गया। इसके बाद उसने जहाज़ पर नौकरी कर ली १७५५ ईस्वी में उसने रायल नेवी (सरकारी जहाजी बेड़े) की नौकरी कर ली। फ्रांस के सप्तवर्षीय युद्ध में उसने बड़ी वीरता दिखलाई। वह अधिकतर अमरीका के पड़ोस वाले समुद्रों में रहा। उसने न्यूफाउंडलैंड-तट के सर्वे पैमायश में बड़ी सहायता दी। १७६२ ई० में इंगलैंड लौटकर उसने ब्याह कर लिया। पर १६ वर्ष के विवाहित जीवन में वह केवल ४॥ वर्ष

अपनी स्त्री के साथ रह सका। इस समय उसने गणित और ज्योतिष में बड़ी दक्षता दिखलाई।

१७६८ में लन्दन की रायल सोसाइटी को शुक्रग्रह का निरीक्षण करने के लिये प्रशान्त महासागर में एक जहाज भेजने की आवश्यकता प्रतीत हुई। यह काम जेम्स कुक को सौंपा गया। वह एण्डेवर नामी जहाज़ का कप्तान बना दिया गया। २६ अगस्त सन् १७६८ ई० में एण्डेवर जहाज़ ने प्लीमथ बन्दरगाह से प्रस्थान किया।

स्कर्वी बीमारी दूर रखने के लिए उसने इतनी ताजी गोभी नमक की तहों के बीच में रख ली कि यह साल भर तक चली। उसने नींबू का रस भी रख लिया मेडीरा, ब्रेजील, पेटेगोनिया और मेजीलन प्रणाली के मार्ग से एण्डेवर जहाज़ प्रशान्त महासागर की ओर बढ़ा। १७६९ के अप्रैल मास में जहाज़ टेहिटी द्वीप पहुंचा। कुक के साथी अक्सर समुद्री चिड़ियों (अल्बेट्रास) का शिकार करते थे। यह १० फुट २ इंच लम्बी थी। खाल उतार कर उसे समुद्री पानी में धोते थे। मीठा पानी कम खर्च किया जाता था

रोज, रोज, नमक मिला हुआ सुअर और गाय का मांस खाते खाते थक जाने पर इन चिड़ियों का मांस बड़ा स्वादिष्ट लगता था। कहीं कही मूँगे के द्वीप और एटोल मिले। मूलनिवासियों ने नारियल मछली और केले से अंग्रेजों की दावत की। टेहिटी में कुक ने वेनिस (शुक्र) ग्रह की गति का भली भांति निरीक्षण किया और उसे लेख बद्ध कर लिया। टेहिटी में एक रानी का राज्य था। यहाँ अंगेज, मल्लाहों का जीवन आनन्द से बीता। एक बार एक अंग्रेज मल्लाह ने टेहिटी वासियों की भीड़ पर गोली चलाई और एक सरदार को जान से मार डाला। इससे मूलनिवासी बिगड़ गये। टेहिटी वासी देवताओं की पूजा किया करते थे। इनके पुजारियों को ज्योतिष, नाव चलाने और वैद्यकी का अच्छा ज्ञान होता था। ये लोग आवागमन में विश्वास रखते थे। शव के पास ये लोग केला, नारियल, लकड़ी की गदा और अन्य आवश्यक वस्तुयें रख देते थे। इनका क़द लम्बा और शरीर सुडौल था। ये लोग बहुत शुद्ध रहते थे। दिन में तीन बार स्नान करते थे और प्रत्येक भोजन के बाद भली भांति कुल्ला करते थे और हाथ

पैर धोते थे। ये लोग छाल के कपड़े पहनते थे। धूप के समय बहुत कम कपड़े पहने जाते थे। ये लोग सुअर, मुर्गी और कुत्ते पालते थे। केला, नारियल, सकरकन्द, गन्ना, मटर, जम्बू कटहल आदि का भोजन करते थे। ये लोग मांस और मछली भी खाते थे। मुँह हाथ-पैर भली भांति धोने के बाद ये पेड़ या घर की छाया में बैठकर भोजन करते थे। उन्हें नाचने गाने का बड़ा प्रेम था। वे अपने ढोल पर शार्क की खाल मढ़ते थे। अपने घर बांस और नारियल के पत्तों से ऊंचे भाग में बनाते थे। ये लोग लाव के कड़े पत्थर से कुल्हाड़ी और बसूला बनाते थे। पड़ोस में जाने के लिए बड़ी नाव (इबाहा) चलाते थे।

टेहिटी के बाद कुक ने उत्तर पश्चिम की ओर सोसायटी द्वीप समूह का पता लगाया। नये देश का पता लगाने के लिये। कुक ने अपना जहाज़ दक्षिण की ओर मोड़ा। एक छोटे चेटेरोआ द्वीप को छोड़कर इधर कोई बड़ा देश न मिला। इस छोटे द्वीप के निवासी छाल और पत्ते के कपड़े पहनते थे और अपने शरीर को तरह तरह के रंग से रंग लेते थे। १५ अगस्त को

जहाज़ पश्चिम की ओर मोड़ा गया। ७ सप्ताह तक लगातार पश्चिम की ओर खेने के बाद नया देश दिखाई दिया। ८ अक्तूबर को कुक का जहाज़ ठहरा वहां कुक के साथियों को कोई आवश्यक वस्तु न मिली। इस लिये कुक ने इसका नाम पावर्टी बे (दीन खाड़ी) रक्खा।

न्यूज़ीलैंड के माओरी और अंग्रेज मल्लाहों में मुठ-भेड़ हो गई। अंग्रेज़ों की गोली से कुछ माओरी मार डाले गये। कुछ नावों को रोक कर उनके खेने वालों को शस्त्र के ज़ोर से मित्र बनाने का प्रयत्न किया गया। माओरी लोग नावें लेकर भागे। उन पर गोली चलाई गई। अन्त में कुछ पकड़ लिये गये। इन्हें जहाज़ पर ले जाकर अच्छे कपड़े पहनाये गये। अच्छा भोजन (नमकीन सुअर का मांस और रोटी) दिया गया। टेहिटी दुभाषिये (जो अंग्रेज़ी और टेहिटी भाषा बोल लेता था) ने इन्हें बहुत समझाया और बतलाया कि गोरे लोग ताज़ा पानी और भोजन चाहते हैं और बदले में लोहा और दूसरी आवश्यक वस्तुयें देने को तयार हैं। इस तरह कुछ समझौता हुआ।

अन्वेषक-दर्शन

माओरी लोग मछली और एक प्रकार की जड़ को भून कर खाते थे। वे सकरकन्द और लौकी भी उगाते थे। इनके घर बड़े साफ सुथरे थे। वे अपने शरीर पर गुदना गोदते थे। और लाल मिट्टी से रंग लेते थे। इनका देश हरा भरा था। जंगल में तरह तरह की विचित्र चिड़ियां थीं। उचित तटीय स्थानों में किले-बन्द गांव थे। समुद्र की ओर सपाट चढ़ाई थी। स्थल की ओर ऊंची दीवार और खाई थी। इनमें सूखी मछलियां और जड़ों का भोजन तो बहुत था। लेकिन पानी की कमी थी। पानी शत्रु की आंख बचाकर रात को पास की धारा से लाना पड़ता था। ये लोग लकड़ी के भाले, गदा और हड्डी के फरसा रखते थे। १७६९ के नवम्बर में कुक ने एक नदी का पता लगाया इसका नाम उसने टेम्स रक्खा। नार्थ द्वीप में ही उसने कारी पाइन के सुन्दर पेड़ देखे। ये पेड़ २०० फुट ऊंचे होते थें। ९० फुट की ऊंचाई पर उनकी पहली शाखा फूटती थी। इनका घेरा २० फुट होता था। उत्तरी सिरे पर एक प्रकार के शहतूत के पेड़ होते थे। उत्तरी अन्तरीप का चक्कर लगाकर कुक का जहाज़ उत्तरी द्वीप के

पश्चिमी तट के पास खास दक्षिण की ओर चला। यहीं उसने ८३४० फुट ऊंचा एगमाएट पर्वत दूर से देखा यह द्वीप के बीच में था पर गरमी में भी बरफ रहती थी। फिर जहाज़ दक्षिणी द्वीप और ताराना की प्राय-द्वीप के बीच वाली चौड़ी खाड़ी में घुसा। ३० जनवरी १७७० ईस्वी को कप्तान कुक ने अंग्रेज़ी झण्डा फहराया। फिर उसने न्यूज़ीलैंड के उत्तरी और दक्षिणी द्वीपों को अंग्रेज़ी (जार्जतृतीय के) राज्य में मिलाने का घोषणा की।

कुक प्रणाली में होकर एण्डेवर जहाज़ पहले कुछ दूर उत्तर की ओर मुड़ा फिर दक्षिण की ओर आया। दक्षिणी द्वीप और स्टुअर्ट द्वीप के बीच वाले जल संयोजक को उसने छोड़ दिया। इसका पता आगे चल-कर कप्तान फोवो ने लगाया। न्यूज़ीलैंड की परिक्रमा करके ३१ मार्च १७७० को कुक ने दक्षिणी द्वीप को उत्तरी अन्तरीप से पश्चिम की ओर प्रस्थान किया। १९ अप्रैल को उसे आस्ट्रेलिया का दक्षिणी-पूर्वी भाग दिखाई दिया। दक्षिणी सिरे पर हावे अन्तरीप से वह उत्तर की ओर बढ़ा। कई जगह धुआं दिखाई दिया।

जिससे सिद्ध होता था कि यह भाग बसा हुआ है। एक पर्वत का आकार ऊंट के समान था। कुक ने उसका नाम माउंट ड्रामीडेरी (उष्ट्र-पर्वत) रक्खा।

२८ अप्रैल १७७० में कुक के जहाज़ ने बोटेनी बे (खाड़ी) में लंगर डाला। पास ही आध मील की दूरी पर सात या ८ घर का एक छोटा गांव था। गांव के कुछ लोग जंगल से लकड़ी ला रहे थे। कुछ मछली मार कर नाव लौटा रहे थे। स्त्रियां भोजन बना रही थीं। इन मूलनिवासियों को जहाज़ देखकर भय आश्चर्य कुछ भी नहीं हुआ। लेकिन जब कुक और उसके साथियों ने किनारे पर उतरने का प्रयत्न किया तो उन्होंने विरोध किया। कुक के साथियों ने गोली चलाई। गोरों की संख्या ३० थी। लेकिन दस फुट लम्बा लकड़ी का भाला और एक छड़ी लेकर दो मनुष्य फिर भी डटे रहे। दुभाषिया इनकी भाषा नहीं समझ पाता था। इन्हें शान्त रखने के लिये कुक ने नाव का चलाना बन्द कर दिया और किनारे पर कीलें, शीशे के दाने और दूसरी छोटी छोटी चीज़ें फेंकी। इन्हें देखकर दोनों नग्न मनुष्य प्रसन्न हुये। लेकिन जब नाव

किनारे की ओर बढ़ी तो इन्होंने फिर विरोध किया। गोरों ने गोलियां चलाईं और मूलनिवासियों ने मछली की तेज़ हड्डी लगे हुये लकड़ी के भाले फेंके। अन्त में मूलनिवासी गांव छोड़कर भाग गये। जल्दी में कुछ बच्चे और भाले घरों पर छूट गये। गोरों ने भाले ले लिये और बच्चों के पास शीशे के दाने आदि छोटी छोटी छोटी चीज़ें फेंक दीं। पड़ोस में कुछ मीठा पानी मिला। इस ओर की भूमि बड़ी सुन्दर थी। कहीं जंगल था। कहीं घास थी। सब कहीं खेती हो सकती थी। यहां कंगारू और एक प्रकार के भेड़िया (जंगली) घूमते थे। कंगारू का शिकार करके गोरे लोगों ने उसका मांस खाया। जंगली फूलों की अधिकता होने से कुक ने इस स्थान का नाम बाटनी बे (वनस्पति की खाड़ी) रक्खा। १७७० की छठी मई को कुक ने यहां से प्रस्थान किया। आगे बढ़ने पर एक स्थान का नाम पोर्ट जैक्सन रक्खा गया। यहीं आज कल सिडनी का सुन्दर बन्दरगाह स्थित है। उत्तर की ओर बढ़ने पर तट की पहाड़ियां अधिक ऊंची दिखाई देने लगीं। पहाड़ और मैदान सब कहीं पेड़ थे। जहां इस समय ब्रिस्बेन बन्दर-

गाह है उसके सामने कुक को कई द्वीप मिले। एक स्थान पर बस्टर्ड चिड़िया का शिकार किया। इसका नाम बस्टर्ड बे रक्खा गया। यहीं पड़ोस के तट में ऐसी सीपें थीं जिनमें मोती पाये जाते थे। केपिलबे (वर्तमान राखम्पटन) के सामने एण्डेवर जहाज़ ने लंगर डाला इस ओर के मूलनिवासी अधिक असभ्य थे। वे न घर बनाते थे और न आग का प्रयोग करते थे। इस ओर छिदने वाली घास थी और मच्छड़ भी बहुत थे। वृक्ष सब कहीं यूकेलिप्टस जाति के थे। इस ओर का तट बड़ा भयानक था। नुकीली चट्टानें उथले पानी के नीचे छिपी थीं। ये मूँगे की चट्टानें बड़ी कड़ी थीं। १३०० मील की यात्रा बड़ी चिन्ता में बीती। अन्त में एक रात को उत्तरी (क्वीन्सलैंड) तट के पास एण्डेवर जहाज एक चट्टान से टकरा गया। पानी की गहराई नापने से पता लगा कि मूँगे की दीवार कुछ ही गहराई पर है। जहाज़ को हलका करने के लिये बन्दूकें, लोहा, पत्थर, पीपे, तेल के घड़े और दूसरी सड़ी हुई चीज़ें उतार ली गईं। जहाज की तली में पहले थोड़ा पानी आता था फिर अधिक पानी भरने लगा। पानी उलीचने के लिये कुछ

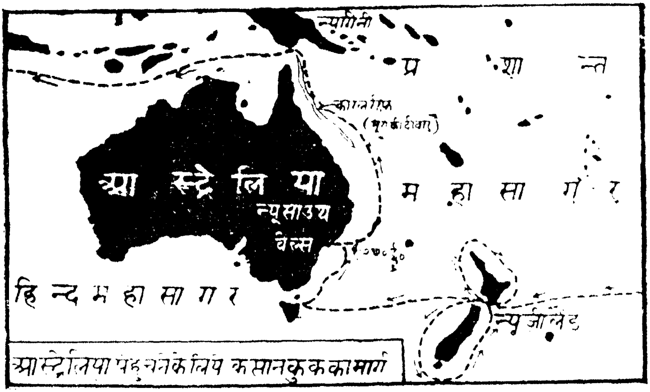
मनुष्य लगा दिये गये। सबेरा होने पर ज्वार के बढ़ने के कारण संकट और भी अधिक बढ़ गया। सर्वनाश सामने दिखाई दे रहा था। लेकिन कुछ और मनुष्य पानी उलीचने पर लगाये गये। अन्त में हिम्मत करके शेष मनुष्यों ने जहाज़ को ढकेला। भाग्य से जहाज पानी में चलने लगा। फिर सब मनुष्य पानी उलीचने में लग गये। पानी कम होने पर छेद बन्द किया गया। छः दिन किसी प्रकार चलने के बाद एक सुरक्षित स्थान मिला। यहां एक नदी के मुहाने पर जहाज रोका गया बीमारों के लिये किनारे पर डेरे लगाये गये। फिर जहाज को खाली करके मरम्मत की गई। एक छेद में मूंगे का टुकड़ा अटका हुआ था। मरम्मत में एक महीना लगा। इस ओर के मूलनिवासियों ने अधिक मित्र भाव प्रकट किया।

मरम्मत हो जाने पर कुक ने मूँगे की दीवार से दूर बाहर की ओर जहाज चलाया। गहरा पानी पाकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। गहरे पानी में मूंगे की नुकीली चट्टानों का भय न था। लेकिन इधर भयानक तूफान आते थे। शान्त पानी में जहाज़ जितना नहीं चूता

था उससे अधिक वह तूफानी गहरे जल में चूने लगा। तीन दिन के बाद तूफान ने उसे मूंगे की दीवार की ओर ढकेल दिया। लेकिन लौटते हुये ज्वार के साथ वह फिर गहरे पानी में पहुंच गया। बेरियर रीफ की यात्रा सचमुच बड़ी भयानक थी।

उत्तर की ओर पहुँचने पर कुक उसी प्रणाली में पहुंचा जिसका पता टारेस नामी उच मल्लाह ने लगाया था। इसको पार करके वह न्यूगिनी के दक्षिणी तट के पास पास चला। एक बार वह नाव लेकर किनारे पर उतरा। पहले कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया। लेकिन जब वह भीतर की ओर बढ़ा तब जंगल में मनुष्यों का शब्द सुनाई दिया। अचानक आक्रमण हो जाने के डर से वह फिर जहाज़ पर लौट आया। इस ओर के मूलनिवासी इस प्रकार से आग जलाते थे मानो बन्दूक का धुआं छूट रहा हो। अन्त में कुक का जहाज़ एक छोटे द्वीप में एक उच्च उपनिवेश में पहुँच गया। यहां उसे ताज़ा मांस और फल मिले। इसके बाद वह बटेविया बन्दरगाह में पहुंचा। वहाँ जहाज़ की भलीभाँति मरम्मत की गई। लेकिन यहाँ की जलवायु मल्लाहों को

अनुकूल न पड़ा। कुछ मल्लाह मर गये। टेहिटी दुभाषिया भी मर गया। अन्त में तीन वर्ष के बाद १३ जुलाई सन् १७७१ को कुक का जहाज़ इंगलैंड पहुंच गया। भौगोलिक ज्ञान बढ़ाने के अतिरिक्त कुक ने इस साहस पूर्ण यात्रा से पूर्वी आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड पर अंग्रेज़ी झंडा फहराकर ब्रिटिश साम्राज्य की वृद्धि की।



आस्ट्रेलिया पहुंचने के लिए कप्तान कुक का मार्ग

१७७२ के जून मास में रिज़ोल्यूशन नामी जहाज़ पर कुक ने दूसरी बार प्रस्थान किया। इस बार जहाज केप आफ गुड होप पहुंचा। वहां से फिर वह दक्षिण

पूर्व की ओर मुड़ा। यहां उसे ठंडे पानी में आयसबर्ग (हिम शिलाओं) और तूफानी लहरों का सामना करना पड़ा। कुक का जहाज, ६४ दक्षिणी अक्षांश तक गया। पर मार्ग में उसे छोटे द्वीप न मिले जो दक्षिणी अफ्रीका और एण्टार्क्टिका के बीच में बिखरे हुये हैं। १७७३ के २० मार्च को उसने दूसरी बार न्यूज़ीलैंड का दक्षिणी द्वीप देखा। १०, ९८० मील यात्रा करने के बाद २१ मार्च को उसने डस्काबे (धुंधली खाड़ी) में लंगर डाला। यहां एक मल्लाह ने सील का शिकार किया। यहां रेतीली मक्खियों के काटने से मल्लाहों को बड़ा कष्ट होता था।

न्यूज़ीलैंड से कुक का जहाज टेहिटी पहुंचा। यहां गृह कलह से बड़े बड़े परिवर्तन हो गये थे। दुभाषियों के रिश्तेदारों को उसकी मृत्यु का हाल सुनकर बड़ा दुःख हुआ। टेहिटी द्वीप में कुक ने अच्छी नसल की कुछ बकरियां उतार दीं। सोसायटी द्वीप समूह होता हुआ कप्तान कुक पश्चिम की ओर बढ़ा उसने हार्वे द्वीप और टोंगा द्वीप समूह का पता लगाया। यहां अंग्रेज़ों का इतना अच्छा स्वागत हुआ कि कुक ने इस द्वीप समूह

का नाम बदल कर फ्रेंडली (मित्र) द्वीप समूह रख दिया। यहां के लोगों ने कुक को मुर्गियां, सुअर, केले और नारियल बहुत दिये।

इनका पहले स्वतन्त्र राज्य था इनका मन्दिर आयताकार था। इसमें लकड़ी की मूर्तियां थीं। इन लोगों को प्रसन्न करने के लिये अंग्रेज़ मल्लाहों ने मन्दिर में तरह तरह की भेटें चढ़ाईं टोंगाटब द्वीप इतना हरा भरा था कि यहां एक इंच भी ऊसर भूमि न थी। यहां के लोग गन्ना उगाते थे और मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाते थे। सब कहीं तरह तरह के फल उगते थे।

२६ नवम्बर १७७३ को कुक ने फिर दक्षिणी समुद्र की ओर प्रस्थान किया। अन्त में वह ७२ दक्षिणी अक्षांश तक पहुँचा। यह प्रदेश निर्जन था। अतः कुक उत्तर की ओर मुड़ा। १३ मार्च १७७४ को वह ईस्टर-द्वीप में पहुँचा। यहां के निवासी योरुपीय लोगों से परिचित थे। यहां मल्लाहों को फिर केला खाने को मिले। कुछ लोगों ने सकरकन्द मोल लीं। इस द्वीप में अच्छी कारीगरी की पत्थर की बनी हुई विशाल मूर्तियां थीं। फर्श से ये नौ-दस गज़ ऊंची थीं। ये वास्तव में

मरे हुये सरदारों के स्मारक थे। ईस्टर द्वीप से कुक मार्क्वेज़ास द्वीप समूह को गया। यहां स्पेन का अधिक प्रभाव था। यहां के निवासी केला नारियल आदि उगाते थे और सुअर और मुर्गी पालते थे।

मार्क्वेजास द्वीप से रिजोल्यूशन जहाज फिर टेहिटी लौट आया। सोसायटी द्वीप समूह होकर कुक ने हार्वे द्वीप और सेवेज (असभ्य) द्वीप का पता लगाया। सेवेज द्वीप वासियों ने किनारे पर उतरने वाले अँगरेज़ों पर भीषण आक्रमण किया था। इसी लिये इस द्वीप का नाम कुक ने सेवेज द्वीप रक्खा। आगे चल कर कुक ने टर्टिल (कच्छप) द्वीप का पता लगाया। लेकिन प्रधान फिजी द्वीप उससे छूट गया। इस प्रकार फिजी और समोआ द्वीप समूह को छोड़ कर कुक ने प्रशान्त महासागर में प्रायः सभी द्वीपों का पता लगाया।

१७७४ के जुलाई मास में रिज़ोल्यूशन जहाज़ न्यूहेब्रेडोज़ द्वीप समूह पहुँचा। पहले उसका जहाज़ मोलीकोलो द्वीप में ठहरा जो इस द्वीप समूह में दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है। इस द्वीप के निवासी काले, नाटे और कुरूप थे। इनके काले या भूरे बाल छोटे और

घूँघरदार थे। वे अपनी कमर में कसी हुई पेटी बांधते थे। पुरुष नग्न रहते थे। स्त्रियां एक प्रकार का छोटा लहँगा पहनती थीं और अपने चेहरे को लाल रंग लेती थीं। वे अपने बच्चे को थैले में रख कर कन्धे पर लटका लेती थीं। अपने कानों में कछुये की हड्डी की मोटी बाली पहनती थीं उनके कड़े भी इसी हड्डी के बने थे। उनकी पहुँची डोरे में पुही हुई सीपों की बनी थी। उनकी छिदी नाक में गोल सफेद पत्थर लटकता था। यहां के निवासी लकड़ी के भाले, गदा और तीर-कमान रखते थे। तीर की नोक में कड़ी पैनी लकड़ी या तेज़ हड्डी लगी रहती थी। ये किसी प्रकार का पशु नहीं पालते थे।

धुर दक्षिणी ताना द्वीप के निवासी अधिक अच्छे थे लेकिन वे मनुष्याहारी थे। इस द्वीप में एक भीषण ज्वालामुखी था जो बड़ी गड़गड़ाहट के साथ लावा और आग उगलता था। कभी कभी हवा राख और बारीक धूल या बालू से भर जाती थी। कभी कभी चट्टान और कीचड़ की वर्षा होती थी। चाहे जिस किसी दिशा में जहाज़ चलता उस पर ज्वालामुखी की राख बराबर

गिरती रहती थीं। एक बार एक अँग्रेज़ सन्तरी ने बिना किसी कारण के एक मूल निवासी को गोली से मार दिया। इससे ये लोग बिगड़ गये। ताना द्वीप से चलकर जहाज़ एस्पीरिट्सास्टो द्वीप में पहुँचा। यहाँ के निवासी बड़े काले थे।

न्यू हेब्रेडीज़ से दक्षिण की ओर चल कर कुक ने न्यूकेलीडोनिया द्वीप का पता लगाया। इस द्वीप के निवासी दयावान और सभ्य थे। इन्हें सुअर, कुत्ता या मुर्गी का पता न था। लेकिन वे निःसंकोच ताजे फल जहाज पर बेचने के लिये ले आते थे। इनके घर गोल थे। मच्छड़ों को भगाने के लिये इनमें सदा आग का धुआं होता रहता था। मनुष्य नंगे रहते थे लेकिन वे लाल कपड़ा बहुत पसन्द करते थे। वे एक प्रकार का बूमरैंग इस्तेमाल करते थे। इसका दृश्य कुछ कुछ पूर्वी आस्ट्रेलिया के समान था। यहां एक ज़हरीली मछली के खा जाने से कुक मरते मरते बचा। इधर गन्ना, केला और नारियल बहुत होता था। केलीडोनिया के तट पर मूंगे की दीवार थी। यहां से चलकर दक्षिणी सिरे पर कुक आयल आफ चाइन्स (देव दारु

द्वीप) का पता लगाया। साठ सत्तर फुट ऊंचे ऊंचे देवदारु के पेड़ थे। इनकी लकड़ी सफेद हलकी और मज़बूत होती थी। इनसे तारपीन निकलता था। कुक ने नार्फोक द्वीप का पता लगाया। लेकिन केलीडोनिया और न्यूज़ीलैंड के बीच में स्थित लायल्टी द्वीप को वह न देख सका। नार्फोक द्वीप में मनुष्य नहीं रहते थे। जंगलों में तीतर तोता और दूसरी छोटी चिड़िया बहुत थीं।

११ अक्तूबर सन् १७७४ को कुक फिर एक बार न्यूज़ीलैंड पहुंचा। यहां से चलकर कुक टेराडेलफ्यूगो पहुंचा। फाकलैंड होता हुआ वह केप आफ गुडहोप पहुंचा। यहां से चलकर वह इंगलैंड पहुंचा। कुक को दूसरी यात्रा में ३ वर्ष १८ दिन लगे।

दूसरी यात्रा पूरी करके लौटने पर इंगलैंड के राजा जार्ज तृतीय ने २०० पौंड वार्षिक वेतन पर कप्तान बनाया। उसे रहने के लिये सुन्दर घर और भत्ता मिला।

१७७६ के ग्रीष्मकाल में रिज़ोल्यूशन और डिस्कवरी नाम का दूसरा छोटा (३०० टन) जहाज़ लेकर

तीसरी बार इंगलैंड से प्रस्थान किया। इस बार प्रशान्त महासागर के द्वीपों के साथ उसे उत्तरी अमरीका के पश्चिमी तट का भी पता लगाना था। उसके साथ ओमई नाम का टेहिटी निवासी दुभाषिया था। कुछ समय केप आफ गुडहोप में ठहरने के बाद कुक दक्षिणी हिन्द महासागर की ओर बढ़ा। प्रिंस एडवर्ड द्वीप, फ्रेस्नेद्वीप और क्रोज़ेट द्वीप होता हुआ कुक ४८ दक्षिणी अक्षांश में पहुंचा। इस ओर कर्गूलन द्वीप सब से बड़ा है। इसका क्षेत्रफल १४०० वर्ग मील है। इसके पहाड़ २४०० से ६१२० फुट तक ऊंचे हैं। इनमें एक ज्वालामुखी पर्वत है। विशाल हिमागारों और गरम लावा ने बारी बारी से इस द्वीप की वनस्पति नष्ट कर डाली। यहीं कुक ने बड़ा दिन बिताया। यहां उसे मीठा पानी बहुत मिला। पींग्विन, समुद्री चिड़ियों और सील का मांस भी उसे यहां बहुत मिला। सील की चरबी जहाज़ के दीये जलाने के लिये तेल का काम देती थी।

१७७७ के जनवरी मास में वह टस्मेनिया पहुंचा। यहां के नंगे निःशस्त्र निवासी निडर होकर जहाज़ पर

आये। इनका रंग काला, क़द नाटा, रूप सुन्दर और बाल घुंघर वाले थे। न्यूज़ीलैंड, फ्रेंडली द्वीप और सोसायटी द्वीप होकर कुक उत्तर की ओर मुड़ा और उसने क्रिसमस द्वीप का पता लगाया। १७७८ के जनवरी महीने में वह हवाई द्वीप पहुँचा। कुक ने इस द्वीप का नाम जल सेना के प्रथम लार्ड अर्ल आफ सैंड-विच के सम्मानार्थ सैंडविच द्वीप रक्खा था। यहां बर्फीले पर्वतों के साथ साथ विचित्र ज्वालामुखी थे। आगे बढ़कर उसने उत्तरी अमरीका के उत्तरी-पश्चिमी तट का पता लगाया। इस ओर वह बेरिंग प्रणाली तक गया। बरफ की दीवार ने आगे का मार्ग रोक दिया था। यहां से वह हवाई द्वीप शीतकाल बिताने के लिये लौटा। हवाई द्वीप के लोग उसके मित्र थे। लेकिन एक बार उसकी नाव चोरी चली गई। कुक कुछ मल्लाहों के साथ भरी हुई बन्दूकें लेकर राजा को पकड़ने के लिये गया। उसने कहा अगर हमारी नाव न लौटाई गई तो हम लोग इस टापू की सब नावें जला देंगे। तट पर उतरते ही वह सीधे राजा के पास गया। कुक राजा को पकड़ कर जहाज़ में उस समय

तक क़ैद रखना चाहता था जब तक नाव न मिल जावे। इस पर झगड़ा हो गया। सुना गया कि एक गोरे ने एक मूल निवासी सरदार को गोली से उड़ा दिया। इससे वे और भी नाराज़ हो गये और युद्ध की पोशाक पहनने लगे। एक मनुष्य एक पत्थर और एक लोहे की छड़ लेकर कप्तान कुक के पास गया। कप्तान कुक ने उसे गोली से उड़ा दिया। इस पर मूल निवासी पत्थर फेंकने लगे। कुक ने फिर गोली चलाई और दूसरे मूल निवासी को मार डाला। अंग्रेज़ी मल्लाह भी गोली चलाने लगे। लेकिन मूल निवासी इस तेज़ी से उन पर टूट पड़े कि उन्हें (अंग्रेज़ी मल्लाहों को) दुबारा बन्दूकें भरने का अवसर न मिला। उन्होंने चार गोरे मल्लाहों को मार डाला। दूसरों को तट तक भगा दिया। कुक दूसरे मल्लाहों को जहाज़ से बुलाने के लिये मुड़ा। इतने में उसके सिर पर चोट लगी और पीठ में छुरी भोंक दी गई। वह मुँह के बल पानी में गिरा इतने में दूसरे लोग भी कुक पर टूट पड़े और उसे मार डाला। शेष अंग्रेज़ मल्लाह जहाज़ पर भाग आये। निवासियों ने कुक की बोटी-

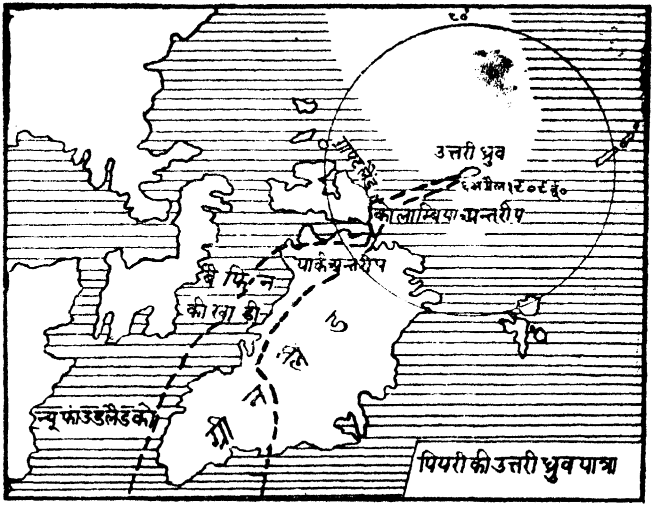
बोटी काट डाली। बाद को कुक के शरीर के बहुत से टुकड़े मिल गये और समुद्र में गाड़ दिये गये। इस प्रकार प्रशान्त महासागर के सबसे बड़े अन्वेषक की अकाल मृत्यु हो गई। लेकिन कुछ स्थानों के नाम उसकी स्मृति में रक्खे गये।

उत्तरी ध्रुव का अन्वेषक पियरी

राबर्ट एडविन पियरी एक अमरीकन था। उसका जन्म १७५६ ईस्वी में हुआ था। १८७७ में बी० ए० पास करने के बाद उसने संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जल सेना में नौकरी कर ली। १८८१ में वह जल सेना का लफ्टेनेण्ट बना दिया गया। १८८६ में उसने ग्रीनलैंड के पश्चिमी तट का निरीक्षण किया। इसके बाद उसने उत्तरी ध्रुव का पता लगाने के कई प्रयत्न किये। एक बार उसके पैर की अंगुलियां जमकर जकड़ गईं। एक बार उसकी टांग टूट गई। फिर भी वह लगातार प्रयत्न करता ही रहा। अन्त में १६०६ ईस्वी में उसने उत्तरी ध्रुव का पता लगा ही लिया। १६०८ के जुलाई मास

में उसने बीसवीं बार न्यूयार्क बन्दरगाह से प्रस्थान किया और बीसवीं बार आर्क्टिक वृत्त (उत्तरी ध्रुवीय वृत्त) को पार किया। पहली अगस्त को वह केप यार्क पहुंचा यह संसार का सबसे अधिक उत्तरी अन्तरीप है जहां मनुष्यों का निवास है। इस यात्रा के लिये पियरी ने एक विशेष प्रकार का जहाज़ बनाया था। इस रूज़वेल्ट नामी जहाज़ पर उसने कई एस्किमो परिवारों और २५० कुत्तों को चढ़ा लिया। सब लोगों ने शीतकाल का समय ग्रीनलैंड के उत्तरी पश्चिमी तट के सामने ग्रांटलैंड में बिताया। १६०६ के फर्वरी मास में यहां से ६० मील की दूरी पर केप कोलम्बिया को स्लेज-गाड़ियों द्वारा सामान पहुंचाया जाने लगा। जहाज़ पर कई तरह का सामान लदा था। इसमें २०० मन आटा, साढ़े बारह मन कहवा, १२५ मन शक्कर, १२५ मन बिस्कुट, साढ़े बारह मन तम्बाकू, ३५०० गैलन मिट्टी का तेल और १०० टोन जमे हुये दूध थे। केप कोलम्बिया में पियरी के सात साथी ५६ एस्किमो एकत्रित हुये। इनके साथ १४० कुत्ते और २८ स्लेज (बरफ पर चलने वाली बिना पहिये की गाड़ियाँ) थीं। प्रत्येक स्लेज गाड़ी

भली भांति परिपूर्ण थी। इसमें मनुष्यों और कुत्तों के लिये उनको भोजन और हाँकने वाले के लिए कपड़े लदे थे। इनके अतिरिक्त इस पर बरफ पर चलने वाले जूते, कुल्हाड़ी, बरफ काटने वाली आरी भी थी। इससे प्रत्येक मंडली उचित स्थान पर अपने सोने के लिये बरफ का घर बना सकती थी।



पियरी की उत्तरी ध्रुव यात्रा

पियरी ने भोजन और सामान के साथ पहले दूसरी मंडलियों को आगे भेज दिया। पहली मंडली ने

१६०६ ईस्वी को २८ फर्वरी को प्रस्थान किया। प्रस्थान करने के समय अत्यन्त ठंडी पूर्वी हवा चल रही थी। बरफ इधर उधर खिसक रही थी। ऊंची नीची बरफ ने कई स्लेज गाड़ियों को धक्का पहुँचाया। दो स्लेज गाड़ियां तो ऐसी चकनाचूर हो गईं कि उनकी मरम्मत नहीं हो सकती थी। उनके कुत्तों को नई गाड़ियां लाने के लिये कोलम्बिया भेजना पड़ा।

अन्त में पियरी ने प्रस्थान किया। ४ मार्च तक यात्रा ठीक रही। इसके बाद सामने खुला हुआ जल का चौड़ा भाग मिला। इसको पार करना कठिन था! सब लोगों को छः दिन तक ठहरना पड़ा। देरी से एस्किमो लोग घबड़ाने लगे। वे दो दो और तीन तीन की मंडली में पियरी को बचाकर आपस में तरह तरह की बातें करने लगे। अन्त में पियरी के दो अत्यन्त विश्वासपात्र और वर्षों के आज़माये हुये एस्किमो पियरी के पास आये। बीमारी का बहाना करके उन्होंने जहाज पर लौट जाने की प्रार्थना की। पियरी ने मन बहलाने के लिये बरफ़ पर तरह तरह के खेल खिलाये।

बरफ के बीच में पानी की नालियां बड़ा कष्ट

पहुंचाती थीं। इन पर पचास पचास फुट चौड़ी (कभी-कभी १०० फुट चौड़ी) हिम शिलायें बहती थीं। आगे बढ़ने के लिये एक हिमशिला से दूसरी हिमशिला पर स्लेज और कुत्तों को चढ़ाना पड़ता था। एक बार जब कुत्तों की एक टोली बरफ की एक दरार को पार कर रही थी। कुत्ते फिसल पड़े और पानी में जा गिरे। हिम्मत से आगे कूद कर हांकने वाले ने स्लेज को रोक लिया और कुत्तों को एक एक करके पानी में से निकाला अगर कहीं स्लेज गाड़ी भी गिर जाती तो बोझ के कारण सब कुत्ते समुद्र की तली में पहुंच जाते। दूसरी ओर ठोस बरफ मिलने पर जान में जान आई। सब लोग उत्तर की ओर बढ़ने लगे।

पियरी ने लगातार एक महीने तक तेज़ यात्रा की। यह इतना तेज़ चलता था कि जो मंडलियां उसके आगे चली थीं उन्हें उसने पीछे छोड़ दिया। बार्टलेट नामी न्यूफाउंड लैंड के एक मल्लाह की मंडली कुछ आगे थी। उसके पास पहुंचकर पियरी ने बिना उसे छेड़े हुए अपने विश्राम के लिये बरफ का एक घर (इडालू) बनवाया और रात्रि का भोजन करके बिस्तर पर लेट गया। कुछ नींद

आ ही रही थी कि पियरी को बाहर की ओर चिल्लाना सुनाई दिया। पियरी तुरन्त उठा। उसने एक छेद से देखा कि उसके और बार्टलेट के झोपड़े के बीच में पानी की एक चौड़ी धारा बन गई है। जिस बरफ पर बार्टलेट का झोपड़ा था वह धीरे धीरे बह रही थी। अपने झोपड़े के हिमद्वार को ठोकर से गिराकर पियरी तुरन्त बाहर आया। सौभाग्य से बार्टलेट का झोपड़ा उस ठोस बरफ पर जा लगा जहां पियरी खड़ा था। इस प्रकार बार्टलेट की जान बच गई जो टोलियां आगे चली थीं वे पीछे लौटा दी गईं। अन्त में बार्टलेट की टोली भी पीछे लौटी। पियरी ही आगे बढ़ रहा था। उसके साथ एक हबशी नौकर और चार एस्किमो थे। इनके साथ पांच स्लेज गाड़ियां ४० मजबूत कुत्ते और ४० दिन के लिये भोजन था। इस स्थान से उत्तरी ध्रुव केवल १५० मील दूर था। इस स्थान से पियरी सबके आगे आगे चला। वे पांच पड़ाव (मंजलें) तो अच्छी ऋतु में पूरे हो गये। इनके बीच में बहुत कम सोने को मिला। एक बार मार्ग में १०० गज चौड़ी पतली बरफ की पेटी मिली। ज्योंही अन्तिम स्लेज ने

इसे पार किया त्यों ही यह टूट गई। यहां हवा बरफ से जमी हुई ठोस बरफ के समान थी। जैसे बरफ से जमी हुई लोहे की छड़ को पकड़ने से हाथ को कष्ट होता है उसी प्रकार यहां की हवा लगने से शरीर को कष्ट होता था। अत्यन्त ठंडी हवा के लगने से चेहरे पर जलन सी लग रही थी। उस पर दरारें पड़ने लगीं। अन्त में पियरी उत्तरी ध्रुव पर पहुंच गया। यहां पहुंच कर सब को बड़ी प्रसन्नता हुई। सबको भोज दिया गया। कुत्तों को भी दुहरा भोजन मिला। यहीं पियरी ने अपना संक्षिप्त विवरण लिखा। यहां सब कहीं बरफ थी। स्थल का कोई चिन्ह न था। यहाँ पियरी ने पांच भिन्न-भिन्न झंडे फहराया। एक कागज पर अपना और अपने साथियों का नाम लिखकर पियरी ने एक बोतल में बन्द किया और यहीं गाड़ दिया। उत्तरी ध्रुव तक पहुंचने के लिये साहसी यात्रियों ने सदियों से प्रयत्न किया था। स्वयं पियरी ने लगातार २० वर्ष तक प्रयत्न किया था। अन्त में ६ अप्रैल १६०६ ईस्वी को उसे सफलता मिली। इसी समय उसकी प्रसन्नता की सीमा न थी। इस खोज से भूगोल के अध्ययन में एक नया युग आरम्भ हुआ।

अन्वेषक-दर्शन

उत्तरी ध्रुव पर सब लोगों ने कुछ समय तक विश्राम किया लेकिन प्रसन्नता के मारे किसी को नींद नहीं आ रही थी। स्लेजों की मरम्मत करने के बाद लौटना आरम्भ हुआ। कुत्तों का बोझ हलका करने के लिए उन्हें दुहरा भोजन दिया गया और फालतू कपड़े फेंक दिये गये। कोलम्बिया से उत्तरी ध्रुव तक पहुँचने में ३७ दिन लगे थे। लौटने में केवल १८ दिन लगे। लौटते समय स्थान स्थान पर ठहरने के लिये पहले के बने हुये बरफ के घर तयार थे। नये बरफ के घर बनाने में समय नहीं लगाना पड़ता था रास्ता भी बन गया था। बोझा तो हलका था ही। इन कई कारणों से लौटती बार बहुत कम समय लगा। यदि कहीं लौटते समय यात्रा मंडली को अधिक ठहरना पड़ जाता तो कुत्तों का भोजन अवश्य कम पड़ जाता। पर पियरी इसके लिये तयार था। वह कुछ कुत्तों को मार डालता और उनका मांस दूसरे कुत्तों को खिला देता। दूसरा भोजन उपलब्ध न होने पर एक बार वह स्वयं कुत्ते का मांस खा चुका था।

पियरी को सुनसान ध्रुव प्रदेश की लम्बी रातों, और लम्बे दिनों में और बर्फीली यात्रा की कठिनाइयों

से संग्राम करने में उसे बड़ा आनन्द आता था। इसी वीरता और लगन के कारण संसार में उसका बड़ा मान हुआ। १६२० ई० में वह इस लोक से चल बसा। लेकिन भूमंडल पर वह अपनी अमर कीर्ति छोड़ गया।

शेकिल्टन

अर्नेस्ट हेनरी शैकिल्टन आयरलैंड के किल्की स्थान में १५ फर्वरी १८७४ ईस्वी को पैदा हुआ था। उसने डुल्विच कालेज में शिक्षा पाई। शिक्षा समाप्त करने पर उसने एक व्यापारी जहाज पर नौकरी कर ली। जब केप्टन स्काट ने दक्षिणी ध्रुव की यात्रा मंडली बनाई तो शैकिल्टन इसका एक सदस्य था। डिस्कवरी जहाज़ केपटाउन होकर न्यूज़ीलैंड आया। यहां १६०१ के बड़े दिन को उसने दक्षिणी ध्रुव के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा में शैकिल्टन ने बड़ा उत्साह दिखलाया। लम्बी अंधेरी रातों में ध्रुव प्रदेश के साथियों का मन बहलाने और बाहरी लोगों को ज्ञान प्रदान करने के लिये साउथ पोलर टाइम्स नामी

समाचार पत्र को टाइप रायटर से छाप कर तयार किया। अगस्त महीने में सूर्य के प्रकाश में आगे बढ़ने की तयारी की गई। दिसम्बर तक सब लोग ८२ दक्षिणी अक्षांश तक पहुँच गये। इसके बाद केप्टेन स्काट ने लौटने का आदेश दिया। इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध की ग्रीष्म ऋतु थी। सूर्य यहां लगातार २४ घंटे दिखाई देता रहता था। फिर भी यहां का तापक्रम संहनाश (फ्रीज़ीग पाइन्ट) से कई अंश नीचे रहता था। कभी कभी बर्फीली आंधियां आती थीं। बरफ भी गिर जाती थी। कुत्ते और मनुष्य दोनों ही पर कड़ा परिश्रम पड़ता था। लौटती यात्रा में शैकिल्टन का बुरा हाल हो गया। वह स्लेज खिचवाने में असमर्थ था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। वह धीरे धीरे चलता रहा। अन्त में वह सहायतार्थ आने वाले जहाज़ पर सवार होकर इंगलैंड चला गया। अच्छा होने पर कुछ वर्ष बाद शैकिल्टन ने दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रस्थान किया। इस बार शैकिल्टन ने पूरी तयारी की। उसने अपने साथ इतना भोजन लिया जो १२ मनुष्यों के लिये दो वर्ष तक पर्याप्त था।

हाथ और पांव के लिये नमदे और शेष ऊनी कपड़े तयार करवाये। रेनडियर की खाल के ६० जोड़े बूट और ६० जोड़े विशेष स्की बूट बनवाये गये। इनमें बाहर की ओर नमदा लगा था। हाथों के लिये नमदे और ऊन के दस्ताने मोल लिये गये। बूट, दस्ताने, स्की, स्पेन के थैले और स्लेज नार्वे में बनवाये गये। बोझा ढोने वाली कुछ स्लेज ११ फुट और कुछ १२ फुट लम्बी थीं। सामान ढोने के लिये ध्रुव प्रदेश के एस्किमो कुत्ते और मंचूरिया के टट्टू इकट्ठे किये गये। एक छोटा मोटर भी था। टट्टू बोझा ढोने के लिये अधिक उपयोगी थे। केवल उत्तरी गोलार्ध से दक्षिणी गोलार्ध तक लाने में डर था कि शायद भिन्न भिन्न जलवायु को पार करने में वे कहीं रास्ते में ही न मर जायें। किसी प्रकार वे दक्षिणी गोलार्द्ध में आ तो गये। लेकिन ४ टट्टू नमकीन बालू अधिक खा गये और निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच कर मर गये।

शैकिल्टन ने अपने साथ वैज्ञानिक यन्त्र और औज़ार भी रख लिये थे। एक विशेष प्रकार का लकड़ी का कमरा बनवाया था जो अलग अलग टुकड़ों

बना था। ध्रुव प्रदेश की आंधी और सरदी रोकने के लिये यह कमरा उचित स्थान पर टुकड़ों को जोड़ कर तयार किया जा सकता था। यह ३३ फुट लम्बा १६ फुट चौड़ा और ८ फुट ऊंचा था। यह और दूसरा सामान लाद कर निमराड नामी जहाज़ ने ७ अगस्त को न्यूज़ीलैंड के लिये प्रस्थान किया। चलते समय सम्राट सप्तम एडवर्ड ने दर्शन दिये और महारानी एलेक्ज़ेण्ड्रा ने अपने हाथ से यूनियन जैक झंडा प्रदान किया। १९०८ की १ जनवरी को शैकिल्टन ने न्यूज़ीलैंड के लिटिलटन बन्दरगाह से ध्रुव प्रदेश के लिये प्रस्थान किया। दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की तेज आंधी में छोटा जहाज़ इतना (५० अंश से ऊपर) इधर उधर झुक जाता था कि मनुष्यों और पशुओं को अपने स्थान पर रहना कठिन हो गया था।

रास्ते में लगातार बुरा मौसम मिला कुछ मल्लाहों की धारणा थी अलबेट्रास पक्षी को मारने से ऐसा हुआ है। पुराने मल्लाह उस पक्षी को मारना बड़ा अशुभ मानते थे। १४ जनवरी को प्रथम बार आइसबर्ग दिखाई दिया। समुद्र का रंग भी गहरे नीले से कुछ हरा हो चला था। हवा और पानी का ताप क्रम घटकर

३२ अंश फारेन हाइट रह गया था। इसके बाद आयसबर्ग (हिमशिलायें) लगातार मिलती रहीं और सील भी दिखलाई देने लगी। १७ जनवरी को शैकिल्टन ७०°४३ दक्षिणी अक्षांश और १७८°५८ पूर्वी देशान्तर में पहुँचा। अब जहाज के पड़ोस में कड़ी बरफ मिलने लगी। २३ जनवरी को सवेरे हो बड़े बड़े आयसबर्ग के साथ साथ हिम बेरियर की धुंधली रूपरेखा दिखलाई देने लगी। कुछ ही समय में यह विशालकाय हिम पर्वत स्पष्ट दिखाई देने लगा। इसे देखकर सब लोग खुशी से उछल पड़े। दूर से यह बरफ की समतल दीवार जान पड़ती थी। पास आने पर इसके अलग अलग निकले हुये खंड दिखाई देने लगे। आधी रात को इस बेरियर के बड़े भाग का अचानक सिरा आगया और जहाज़ ने उथली खाड़ी में प्रवेश किया। रात के साढ़े बारह बजे दक्षिणी सूर्य की किरणें हम लोगों के चेहरों पर पड़ रही थीं। पूर्व की ओर बरफ से ढका हुआ ३०० फुट ऊंचा स्थल मालूम पड़ता था। इस खाड़ी में सब कहीं ह्वेल कोलाहल मचा रही थीं। इसलिये शैकिल्टन ने इसका नाम ह्वेल की खाड़ी रक्खा। यहीं

एडवर्ड सप्तम लैंड के पास शीत काल बिताने का निश्चय किया गया। और भागों की अपेक्षा यहां से दक्षिणी ध्रुव ६० मील अधिक निकट पड़ता था। लेकिन समुद्र की ओर से विशाल हिम शिलायें धीरे धीरे स्थल के हिमागारों से मिलने के लिये आ रहीं थीं। यदि जहाज़ यहां से शीघ्रतापूर्वक न निकलता तो वह हिम-शिलाओं के बीच में दबकर चकनाचूर हो जाता। अतः आगे बढ़कर मैकमर्डो साउंड के पास एक छोटी समतल घाटी में शीतकालीन निवास स्थान बनाया गया। इस घाटी के पीछे बर्फीली पहाड़ी थी जो तेज़ ठंडी हवाओं से रक्षा करती थी।

टट्टू, लकड़ी का घर, स्लेज आदि सब सामान उतारने के बाद निमराड (जहाज़) ने लौटने की तयारी की। जहाज़ का तुरन्त लौटना आवश्यक था क्योंकि जहाज़ के जिन छेदों में पानी था वह सब जाकर बरफ बन गया था। भीतर का पानी बाहर न निकलने के कारण डेक का पानी भी जमने लगा था। बरफ की तह एक फुट मोटी हो गई थी। अधिक बोझ बढ़ने से जहाज़ के डूबने का डर था। अतः छेदों को काटकर

भीतर का पानी निकाला गया ऊपर के रस्सों पर भी बरफ जमने लगी थी। ताप क्रम पानी के जमने के बिन्दु से कई अंश नीचा था। हवा बड़े वेग से चल रही थी। लकड़ी का जोड़ा हुआ घर ज्यों का त्यों खड़ा था। लेकिन लगातार अंगीठी जलाने पर भी भीतर गरमी नहीं रहती थी। २२ फरवरी को टट्टू जहाज से कोयला ढो लाये। शीत काल कमरे के भीतर बिताया गया। यहां प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रायः ६ फुट ४ इंच लम्बी और साढ़े तीन फुट चौड़ी जगह बिस्तर बिछाने के लिये थी। यहां लघु ताप क्रम में स्लेज खींचने और दूसरा काम करने से बड़ी भूख लगती थी प्रत्येक मनुष्य को आधा सेर गाय के सूखे मांस का आटा मोटा बिस्कुट मिलता था। लेकिन इससे तृप्ति नहीं होती थी। ढाई छटांक शक्कर, चाय या कोकोआ मिलाने अथवा अन्य प्रकार से खाने के लिये अलग से मिलती थी। कभी कभी चोकोलेट (विलायती मिठाई), पनीर, जई का दलिया भी रहता था। पकाने के लिये विशेष प्रकार का स्टोव (अंगीठी) था जो आध घंटे में गरम गरम भोजन तयार कर देता था। बल बनाये रखने के लिये भोजन पर्याप्त था लेकिन इससे पूरी तृप्ति नहीं होती थी।

अन्वेषक-दर्शन

पांचवीं मार्च को इरेबस पर्वत पर चढ़ाई करने के लिये प्रस्थान किया गया। इरेबस और टेरर जहाज़ बहुत पहले इस ओर पता लगाने आये थे। वे डूब गये। उनकी स्मृति को चिरंजीवी रखने के लिये दक्षिणी ध्रुव प्रदेश के इस निकटवर्ती पर्वत का नाम इरेबस रख दिया गया। इरेबस पर्वत १३००० फुट ऊँचा था। इस की चोटी पर एक बिशाल आखात था। यहीं पुराने समय में ज्वालामुखी का मुख (क्रेटर) था। इस के किनारे के ऊपर जाग्रत ज्वालामुखी खड़ा है। इस से प्रायः भाप और धुंआ निकलता रहता है। चोटी पर पहुंचने के लिये बर्फीले ढाल के ऊपर चढ़ना पड़ा। सामान स्लेज पर लदा था। जहां स्लेज की चढ़ाई का अन्त हुआ वहां प्रत्येक चढ़ने वाला अपना भोजन और वस्त्र एक थैले में रखकर चलता था। रास्ता बनाने के लिये कहीं कहीं बरफ को कुल्हाड़ी से काटना पड़ा। एक ओर से बर्फीली आंधी जोर से चल रही थी। आठ तारीख को सारा दिन और सारी रात प्यासे बितानी पड़ी। पानी बरफ को गलाने से ही मिल सकता था। लेकिन तेज़ आंधी में बरफ को गलाने के लिये दीवा को जलाना असम्भव था। एक

मनुष्य के पैर के अंगूठे विकराल ठंड से सुन्न और काले पड़ गये। पर अन्त में १० मार्च को एक मंडली इरेबस की चोटी पर पहुंच गई। यहीं जाग्रत ज्वाला मुखी का किनारा था। पहले धुआं और भाप के कारण तली या दूसरा किनारा दिखाई नहीं देता था। यह धुआं चोटी से १००० फुट ऊंचा जाता था। कई मिनट तक डरावना शब्द होता था फिर भीतर से भाप का सफेद बादल सा ऊपर उछलता था। हवा में सब कहीं गन्धक की जलने की गन्ध थी। पड़ोस की कहवा गन्धक के जलने से लाल हो जाती थी। उत्तरी हवा के चलने से भाप एक ओर को हो गई और ६०० फुट गहरी तली दिखाई देने लगी। इस में तीन खौलते हुये कुंड दिखाई देते थे। चट्टानों के नमूने और चित्र लेने के बाद सब लोग नीचे लौटे। अभी शीतकाल का अन्त नहीं हो पाया था सूर्य भी भलीभांति नहीं दिखाई देता था। फिर भी १२ अगस्त को छोटी यात्रा आरम्भ कर दी गई। प्रत्येल मनुष्य के लिये १५ दिन का भोजन और ३ गैलन पेट्रोलियम था। सोने के लिये प्रत्येक मनुष्य का बैग (थैला) अलग था। तापक्रम पानी जमने के बिन्दु से

८२ अंश नीचा था। फिर इन थैलों में घुस जाने से पूरी नींद आती थी। १४ अगस्त को शेकिल्टन ६२ पाइंट पर पहुँच गया जहां इससे पहले स्काट की डिस्कवरी यात्रा मंडली ने शीत काल बिताया था। वहां बहुत से परिचित पदार्थ मिले। नवम्बर मास तक दक्षिणी प्रदेश में प्रकाश इतना कम था कि प्रायः सब कहीं सफेद समतल भूमि मालूम पड़ती थी। वास्तव में जगह जगह पर तीन-चार फुट का उतार चढ़ाव था। सूर्य निकलने पर जब धुंधला प्रकाश रहता है तब बरफ धरातल पर लगातार नंगी आंख से देखने से एक प्रकार का धुंधलापन या अन्धापन हो जाता है। ८ नवम्बर तक शीत कालीन निवास स्थान से केवल ५१ मील बढ़ पाये थे। दक्षिणी ध्रुव यहां से ७०० मील दूर था। नवीं नवम्बर को सुहावने ऋतु में ध्रुव की ओर प्रस्थान किया गया। पहले दिन १४ मील तय किये गये। रात को नींद खूब आई। केवल मंचूरिया के टट्टुओं ने रात को आपस में लड़कर जगा दिया। २६ नवम्बर तक सब लोग ८२.१८ दक्षिणी अंश तक पहुँचे। यह वह दक्षिणी स्थान था जहां अब तक कोई दूसरा मनुष्य नहीं पहुँच पाया था।

स्काट केवल ८२'१६॥ तक पहुंच सका था। इस बीच में बरफ के विशाल समतल मैदान में एक स्थान पर ऐसी गीली बरफ मिली कि एक टट्टू आगे बढ़ने में असमर्थ था। उसे अलग करके गोली से मार दिया गया। उसका मांस छोटे टुकड़ों में काटकर खाने के लिये रख लिया गया। पहली दिसम्बर को शेकिल्टन ८३.१६ दक्षिणी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ से पूर्व की ओर ऐसी भूमि दिखाई देती थी जिसके एक ओर ऊँची बर्फीली पहाड़ी थी। एक लाल पहाड़ी ३०० फुट ऊँची थी। दृश्य बड़ा सुन्दर था। दरारों और टीलों को पार करने के बाद मंडली चिकनी नीली बरफ के प्रदेश में पहुँची। एक पहाड़ी की चोटी से दक्षिण का मार्ग खुला हुआ दिखाई दिया। इधर उधर हिमागार और पहाड़ियां थीं। ४ दिसम्बर को २००० फुट ऊंचे दर्रे के पास पहुंचे। यहां दक्षिण की ओर साधारण ढाल था। १६ दिसम्बर तक लगभग १०० मील की यात्रा भी हो चुकी थी और सब लोग ६००० फुट ऊंचे हिमागार पर पहुँच गये थे। १८ दिसम्बर को दक्षिणी ध्रुव ३०० मील रह गया था। भोजन ३५ दिन के लिये शेष बचा

था। २१ दिसम्बर दक्षिणी गोलार्द्ध का सब से अधिक गरम दिन होता है। लेकिन इस दिन यहां तापक्रम पानी जमने के बिन्दु से २८ अंश नीचा था। बर्फीली आंधी इतने वेग से चल रही थी कि कान सुन्न पड़ गये। बड़े दिन को शेकिल्टन बड़ी कठिनाई से ८५.५१ दक्षिणी अक्षांश में पहुँच गया था। दक्षिणी ध्रुव लगभग २५० मील दूर रह गया था। २८ दिसम्बर को सब लोग ८६.३१ अक्षाँश और १०,१९९ फुट की ऊंचाई पर पहुँच गये। ९ जनवरी को शेकिल्टन और उसके साथी ८८.२३ दक्षिणी अक्षांश और १६२ पूर्वी देशान्तर में पहुँच गये। यहीं इनकी अन्तिम मंजिल थी। लेकिन यात्रियों की शारीरिक दशा बिगड़ गई थी। भोजन कम हो गया था। दक्षिणी ध्रुव केवल ९ मील दूर रह जाने पर भी वहां तक इस स्थिति में पहुँचना असम्भव था। अतः यहां से लौटने का निश्चय किया गया। लौटते समय यात्रियों को बड़ा कष्ट हुआ, २३ फर्वरी तक एक बार भी पूरा भोजन नहीं मिल पाता था।

दक्षिणी ध्रुव की खोज में वीरता दिखलाने के लिये अर्नेस्ट शेकिल्टन को ३०,००० पौंड इनाम मिला। उसे "सर" की उपाधि दी गई।

देश दर्शन

१९१४ में शेकिल्टन ने दक्षिणी अमरीका की ओर से दक्षिणी ध्रुव को पार करने और न्यूज़ीलैंड की ओर जा निकलने का निश्चय किया। १९१४ के अगस्त महीने में उसने ड्यूरेन्स नामी जहाज़ पर इंगलैंड से प्रस्थान किया। ध्रुव प्रदेश की बरफ का सामना करने के लिये यह जहाज़ मज़बूत लकड़ी का बना था। उसकी मण्डली में २८ मनुष्य थे। अटलांटिक महासागर को पार करके एण्ड्यूरेन्स जहाज़ प्लेट नदी के मुहाने पर (दक्षिणी अमरीका) ब्यूनाज़यर्स बन्दरगाह में पहुँचा। यहाँ से वह साउथ जार्जिया द्वीप गया जहाँ ह्वेल के शिकार करने वालों का प्रधान केन्द्र है। यहां सब लोग एक महीना ठहरे। जब सब तयारी हो गई तब दिसम्बर के आरम्भ में दक्षिण के लिये प्रस्थान किया गया। आगे वेडेल सागर पड़ता था। इसके आगे हज़ारों फुट ऊँची बरफ से ढका हुआ स्थल था। इसी स्थल के मध्य में दक्षिणी ध्रुव स्थित था। शेकिल्टन ने स्थल की यात्रा के लिये जहाज़ पर स्लेज गाड़ियां रख ली थीं। इस निर्जन प्रदेश में पशु और बनस्पति का अभाव था। इसलिये उसने पूरी यात्रा के लिये भोजन

साथ में रख लिया था। बर्फीले समुद्रों में वाल रस (ध्रुव प्रदेश के हाथी) सील और पैंग्विन अवश्य मिलते हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में दिसम्बर ग्रीष्म काल का महीना होता है। फिर भी इस समय यहां बर्फीली आंधियां चलती थीं। समुद्र में आइसबर्ग बहते थे। शेकिल्टन के एण्डयूरेन्स जहाज़ को हिमशिलाओं के बीच में होकर जाना पड़ता था। एक बार जहाज़ के पड़ोस में इतनी लम्बी चौड़ी हिमशिला थी कि यात्रा मंडली ने इस पर चढ़कर फुटबाल का खेल खेला। ३० दिसम्बर को एण्डयूरेन्स ने एण्टार्क्टिक वृज पार किया। इसके बाद हफ्तों तक सूर्य लगातार अस्त ही न हुआ। फिर भी वेडेल सागर में बरफ की रुकावट मिलती ही रही। कहीं यह बरफ मनुष्य के बराबर ऊँची थी। कहीं इसकी ऊँचाई २०० फुट थी। १६ जनवरी को बरफ ने जहाज़ को चारों ओर से जकड़ लिया। जहाज़ इस बरफ़ को हवा या इंजिन (भाप) के ज़ोर से पार नहीं कर सकता था। बरफ से जकड़ा हुआ जहाज़ समुद्री धाराओं के कारण बरफ के साथ साथ कभी आगे जाता कभी पीछे लौटता था। शेकिल्टन

जिधर जाना चाहता था जहाज उससे उल्टी दिशा में जा रहा था। इस तरह महीनों बीत गया। ग्रीष्म ऋतु का अन्त होने लगा। दिन छोटे होने लगे। पहली मई को सूर्य अस्त हो गया। इसके बाद तीन महीने तक सूर्य के दर्शन न हुए।

अगस्त में सूर्य फिर दिखाई देने लगा। शेक्लिटन को आशा थी कि इस बार आगे को यात्रा हो सकेगी। लेकिन इस बार २६ अक्तूबर को हिमशिलाओं ने ऐसा घेर लिया कि उसके चकनाचूर हो जाने का डर था। शेक्लिटन ने जहाज का सामान उतरवा कर हिमशिला पर रखवा लिया। २७ अक्तूबर को जहाज एकदम खाली कर लिया गया। कुछ ही समय में जहाज़ टूट कर नष्ट हो गया। लेकिन मंडली की स्थिति कम संकटमय न थी। जिस हिमशिला पर सामान रक्खा था उस में रात को दरार हो गई। सामान दूसरी जगह रक्खा गया। कुछ सामान नावों पर लादा गया। शेष स्लेज गाड़ियों में भरा गया। २१ दिसम्बर को शेक्लिटन ने स्थल पर पहुँचने का प्रयत्न किया। अधिकांश कुत्ते भोजन के लिए मार डाले गये। ६ अप्रैल को

नावों के लाने के लिये बरफ साफ हुई। जिस बरफ पर डेरे लगे थे वह फिर दो टुकड़ों में बट गया। एक मनुष्य बाल बाल मरने से बचा। १३ अप्रैल को खुला समुद्र मिला। १५ अप्रैल को सब लोग एलीफेण्ट (हस्ति) द्वीप में पहुंचे। सब लोगों को कष्ट था; कुछ बीमार थे। किसी तरह यहां डेरा डाला गया। शेकिल्टन ने एक अच्छी नाव में बैठकर साउथ जार्जिया द्वीप में पहुँचने और वहाँ से शेष लोगों के लिये सहायता लाने का प्रयत्न किया। उसने ५ साथी और चुने। २५ अप्रैल को प्रस्थान किया गया। तूफानी आंधी में नाव को सदा उलटने और डूबने का भय था। १४ दिन तक दिन रात नाव हवा के ज़ोर से चलती रही। पीने के पानी में समुद्र का खारा पानी मिल गया था। इसलिये उनके पीने का पानी खराब हो गया था। कपड़े भी भीग गये थे। ८ मई को साउथ जार्जिया द्वीप का तट दिखाई दिया। १० मई को शेकिल्टन और उसके साथी तट पर उतरे। लेकिन ह्वेल मारने वालों की स्टेशन दूसरी ओर थी। दूसरे साथी नाव खेने में असमर्थ थे। इसलिये शेकिल्टन ने पैदल दूसरी ओर जाने

का निश्चय किया। यह द्वीप पहाड़ी था और बरफ से ढका था। दूसरा तट सीधी रेखा में २० मील था। किसी तरह सब लोग दिन रात बरफ और पहाड़ को पार करके प्रपात के मार्ग से दूसरे तट पर पहुंचे। शेकिल्टन और उसके साथियों की दाढ़ी मूँछ बढ़ गई थी। उसके साथी भी पहले उसे न पहचान सके। अन्त में इनका अच्छा स्वागत हुआ। पहले दूसरे तट पर छूटे हुये तीन यात्रियों को सहायता पहुँचाई गई। इसके बाद एलीफेंट द्वीप को दूसरा जहाज भेजने का प्रयत्न किया गया। लेकिन बरफ ने मार्ग रोक रक्खा था। अतः शेकिल्टन फाकलैंड द्वीप को गया। यहां से उसने दूसरा जहाज भेजा। इसे भी सफलता न मिली। अतः तीसरी बार शेकिल्टन ने मेजिलन प्रणाली से जहाज़ भेजा। इसमें भी बरफ ने उसे सफल न होने दिया। अन्त में उसने चौथी बार फिर जहाज भेजा। इस बार तूफानों ने एलीफेंट द्वीप के पड़ोस की बरफ को बहा दिया था। यहां वह ऐसे अवसर पर पहुंचा जब उसके साथी बचा हुआ अन्तिम भोजन समाप्त कर चुके थे। इसके बाद भूखों मरने के सिवा उनके सामने

और कोई चारा न था। ऐसे अवसर पर शेकिल्टन ने पहुंच कर उन्हें एक प्रकार से दैवी सहायता पहुँचाई। दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने में शेकिल्टन असफल रहा पर उसे इस बात का सन्तोष था कि उसने शक्ति भर प्रयत्न किया था।

१९१४–१९१७ में उसने जो यात्रा की वह भी सफल न हुई। १९२१ में उसने फिर दक्षिणी ध्रुव के लिये प्रस्थान किया। लेकिन इस बार वह अण्टार्कटिक के द्वार पर साउथ जार्जिया द्वीप में इन्फ्लूयेंज़ा से मर गया। वहीं उसकी क़ब्र बनी।
